Dr. Gautam Kumar.
BA(H), Part-I
Paper-II

अरविन्द का राजनीतिक दृष्टिकोण और कार्यविधि
(Aurobindo's political outlook (vision) & Methodology)

अरविन्द का दृष्टिकोण था कि, "भारत का लक्ष्य ब्रिटिश आधिपत्य से पूर्ण मुक्ति पाने का होना चाहिए" और भारत तत्काल ही मुक्ति अर्थात स्वाधीनता प्राप्त करने की योग्यता रखता है। उन्होंने बड़ौदा रियासत में अपनी सेवा प्रारम्भ करने के साथ ही राजनीति में गहरी रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया। इसके लिए उन्होंने आंग्ल-मराठी समाचार पत्र "इन्दु प्रकाश" में New Lamps for old" (पुराने दीपों के बदले नये दीप) शीर्षक से लेखमाला लिखना प्रारम्भ कर दिया। उनके इन लेखों के अध्ययन से उनकी राजनीतिक विचारधारा के तीन रूप सामने आते हैं:-

(i) उदारवादी कांग्रेस के आलोचक का रूप
(ii) ब्रिटिश शासन और अंग्रेजों के आलोचक का रूप
(iii) अपने राजनीतिक कार्यक्रम का स्पष्ट रूप।

(i) **अरविन्द कांग्रेस के आलोचक के रूप में:-** सन् 1893 से लेकर राजनीतिक सन्यास (1910) लेने तक उन्होंने कांग्रेस एवं कांग्रेस की उदारवादी नीति की कड़ी और निरन्तर आलोचना की। इस प्रसंग में उनका दृष्टिकोण लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं के समान था। उन्होंने कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वाधीनता के अस्पष्ट स्वरूप की आलोचना की एवं कहा कि कांग्रेस तुच्छ एवं सारहीन बातों में अपना समय नष्ट कर रही है। उन्होंने कांग्रेस के मन्द-मन्द प्रगति के मार्ग की भी आलोचना की। उन्होंने बतलाया कि फ्रांस में वर्षों से पीड़ित निर्धन जनता ने केवल एक वर्ष की अवधि में ही 1300 वर्षों के अत्याचारी तंत्र को उखाड़

Scanned with CamScanner

फेंका। उन्होंने कांग्रेस के द्वारा अंग्रेज शासकों के प्रति चापलूसी के व्यवहार की भी आलोचना की है। उनका आरोप था कि कांग्रेस अत्यन्त सीमित आधार वाली मध्यमवर्गीय संगठन बनी हुई है। उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व की इस बात की भारी भर्त्सना की कि उन्होंने देश के श्रमिक वर्ग को राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक देशभक्त का सर्वप्रथम और सबसे पवित्र कार्य श्रमजीवी वर्ग का उत्थान एवं उद्धार करना होना चाहिए। वे श्रमजीवी वर्ग का न केवल आर्थिक विकास, वरन् इसके साथ आध्यात्मिक विकास कर उसे ब्राह्मण वर्ग के स्तर पर लाना चाहते थे। उन्होंने देशवासियों को आह्वान किया कि वे सदियों की जड़ता को तोड़कर मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए उठ खड़े हो।

(ii) अरविन्द अंग्रेजों के आलोचक के रूप मे :- अरविन्द ने अपने लेखों मे अंग्रेज सत्ताधारियों पर तीखा और प्रबल प्रहार किया। इसमें उनके दो उद्देश्य थे; (क) देश मे ब्रिटिश विरोधी भावना को उत्तेजित करना (ख) अंग्रेज देवतुल्य हैं, कि धारणा को निर्मूल करना। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश राजनीतिक व्यवस्था और जीवन प्रणाली को पश्चिम की सर्वोत्तम देन नहीं माना जा सकता है साथ ही यह भी मानने से इन्कार कर गये कि सर्वोत्तम गुणों का प्रतिनिधित्व केवल अंग्रेज ही करते है। वे फ्रांस की राजनीतिक व्यवस्था को श्रेष्ठ मानते थे। उनकी रचनाओं मे इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि अंग्रेजों की नीतियों ने भारत की आत्मा को कुंठित कर दिया है, विकास की अंतःशक्तियों को कुचल दिया है और आर्थिक दृष्टि से सर्वनाश कर दिया है। उन्होंने अंग्रेजों का दास बनने मे

गौरव का अनुभव करने वाले भारतीयों का उपहास किया है। उनका कहना था कि आज के भारत में चाहे अंग्रेज का स्थान हो, किन्तु भावी भारत में उसका कोई स्थान नहीं होगा।

(iii) अरविन्द का राजनीतिक कार्यक्रम (साधन) - अरविन्द का विचार था कि, "भारत का लक्ष्य ब्रिटिश आधिपत्य से पूर्ण मुक्ति प्राप्त करने का होना चाहिए। इसके लिए विदेशी शासकों की कृपा और दया पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, वरन् अपनी आन्तरिक शक्ति और बल के असीम भण्डार का सहारा लेना चाहिए।" उनकी यह भी धारणा थी कि परिस्थिति और आवश्यकतानुसार देश की स्वाधीनता के लिए किसी भी मार्ग को अपनाया जा सकता है। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन के लिए दो विधियों के कार्य प्रारम्भ किया। प्रथम, भारत के पौरुष को जगाने का प्रयास और द्वितीय, धार्मिक शक्ति को महत्व देकर उसे राष्ट्रीय आन्दोलन में जोड़ने का प्रयास। अरविन्द का मानना था कि उदारवादियों की प्रार्थना, याचिका और विरोध की पद्धति से स्वाधीनता के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए उन्होंने निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति को अपनाने का सुझाव दिया।

निष्क्रिय प्रतिरोध (passive Resistance):- अरविन्द ने निष्क्रिय प्रतिरोध और आक्रामक प्रतिरोध के अन्तर को भी स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि शासन का संगठित प्रतिरोध या तो निष्क्रिय हो सकता है या आक्रामक। दोनों के बीच मुख्य अन्तर यह है कि आक्रामक प्रतिरोध में ऐसे कार्य किये जाते हैं, जिनसे

Scanned with CamScanner

शासन को सकारात्मक रूप में हानि पहुँचे। निष्क्रिय प्रतिरोध में जनता द्वारा ऐसे सभी कार्यों को त्याग दिया जाता है जिनसे शासक वर्ग का देश का शासन चलाने में किसी भी प्रकार की सहायता पहुँचे। दूसरे शब्दों में, निष्क्रिय प्रतिरोध को शासन के साथ असहयोग की नीति कहा जा सकता है। निष्क्रिय प्रतिरोध भारत जैसे देश में सर्वाधिक अनुकूल है, जहाँ सरकार अपने कार्य-कलापों के लिए जनता के स्वेच्छापूर्ण सहयोग पर निर्भर करती है। अरविन्द ने जिस निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रतिपादन किया है, उसे उन्होंने प्रत्येक स्थिति में अहिंसावादी बनाए रखने की चेष्टा नहीं की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यदि सरकार हिंसा और दमन पर उतर जाय, तो निष्क्रिय प्रतिरोधी का कर्तव्य है कि वह सरकार का विरोध करे और हिंसा का जवाब हिंसा से दे।

Scanned with CamScanner